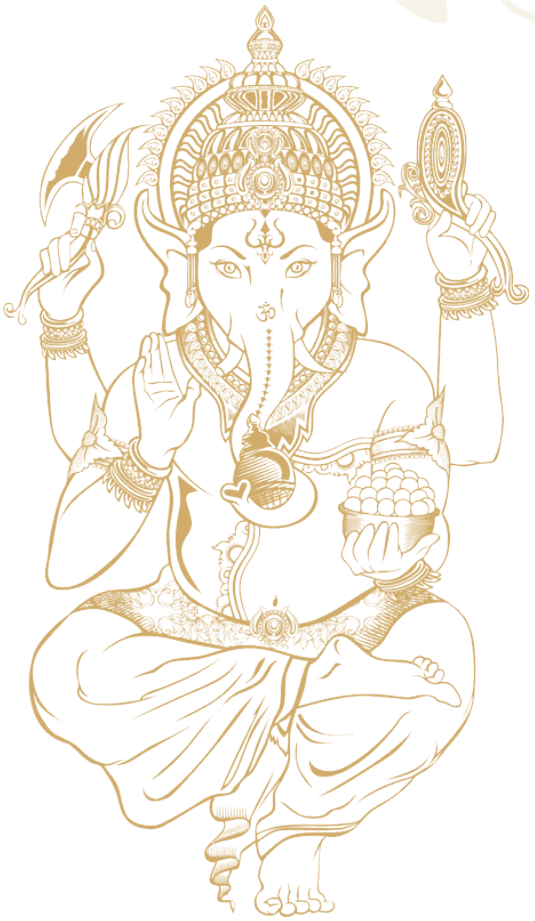

M

Himanshi

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121559001

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121559001 Date: 12/03/2026

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
13/06/1997	जन्म तिथि	13/07/1999
शुक्रवार	दिन	मंगलवार
घंटे 06:32:00	जन्म समय	14:33:00 घंटे
घटी 02:52:50	जन्म समय(घटी)	22:32:46 घटी
India	देश	India
Delhi	स्थान	Delhi
28:39:00 उत्तर	अक्षांश	28:39:00 उत्तर
77:13:00 पूर्व	रेखांश	77:13:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:21:08	स्थानिक संस्कार	-00:21:08 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:22:51	सूर्योदय	05:31:53
19:19:32	सूर्यास्त	19:21:24
23:49:15	चित्रपक्षीय अयनांश	23:50:50

मिथुन	लग्न	तुला
बुध	लग्न लग्नाधिपति	शुक्र
सिंह	राशि	कर्क
सूर्य	राशि-स्वामी	चन्द्र
पू०फाल्गुनी	नक्षत्र	पुनर्वसु
शुक्र	नक्षत्र स्वामी	गुरु
4	चरण	4
सिद्धि	योग	हर्षण
विष्टि	करण	किंस्तुघ्न
टू-टूंगर	जन्म नामाक्षर	ही-हिना
मिथुन	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कर्क
क्षत्रिय	वर्ण	विप्र
वनचर	वश्य	जलचर
मूषक	योनि	मार्जार
मनुष्य	गण	देव
मध्य	नाड़ी	आद्य
श्वान	वर्ग	मेष

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
शुक्र 0वर्ष 2मा 19दि		13:13:50	मिथु	लग्न	तुला	22:52:33	गुरु 3वर्ष 5मा 0दि	
राहु		28:15:10	वृष	सूर्य	मिथु	26:42:07	बुध	
31/08/2020		26:31:15	सिंह	चंद्र	कर्क	00:29:06	12/12/2021	
01/09/2038		03:32:11	कन्या	मंगल	तुला	09:07:46	13/12/2038	
राहु	15/05/2023	13:37:46	वृष	बुध व	कर्क	15:38:13	बुध	10/05/2024
गुरु	07/10/2025	28:06:19	मक व	गुरु	मेष	08:17:51	केतु	07/05/2025
शनि	13/08/2028	17:00:48	मिथु	शुक्र	सिंह	06:32:45	शुक्र	07/03/2028
बुध	03/03/2031	24:31:21	मीन	शनि	मेष	21:24:59	सूर्य	11/01/2029
केतु	20/03/2032	00:35:57	कन्या व	राहु व	कर्क	19:09:30	चन्द्र	13/06/2030
शुक्र	21/03/2035	00:35:57	मीन व	केतु व	मक	19:09:30	मंगल	10/06/2031
सूर्य	13/02/2036	14:28:41	मक व	हर्ष व	मक	21:56:18	राहु	27/12/2033
चन्द्र	13/08/2037	05:41:23	मक व	नेप व	मक	09:28:40	गुरु	03/04/2036
मंगल	01/09/2038	09:54:35	वृश्चि व	प्लूटो व	वृश्चि	14:14:21	शनि	13/12/2038

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:49:15 चित्रपक्षीय अयनांश 23:50:50

लग्न-चलित

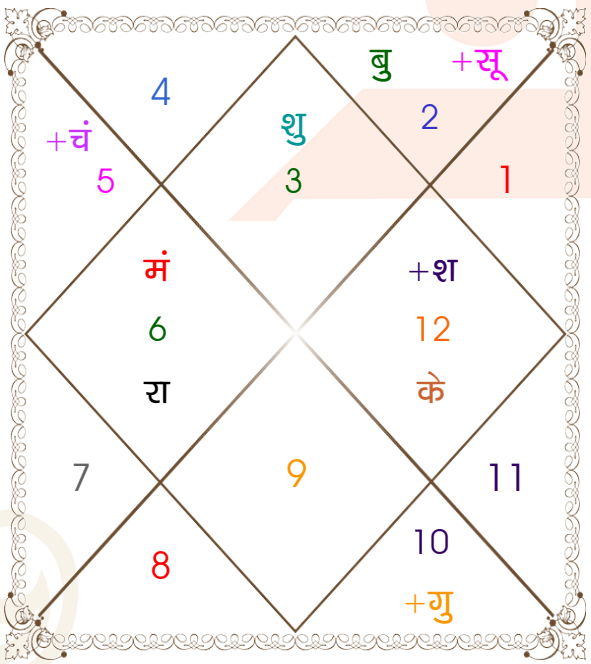

लग्न-चलित

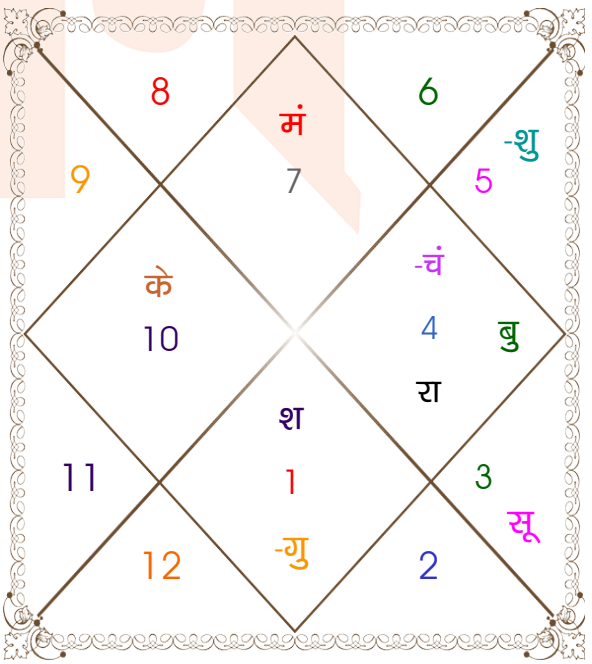

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	विप्र	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	वनचर	जलचर	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	प्रत्यारि	साधक	3	1.50	--	भाग्य
योनि	मूषक	मार्जार	4	0.00	--	यौन विचार
मैत्री	सूर्य	चन्द्र	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	देव	6	5.00	--	सामाजिकता
भकूट	सिंह	कर्क	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	आद्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	20.50		

कुल : **20.5 / 36**

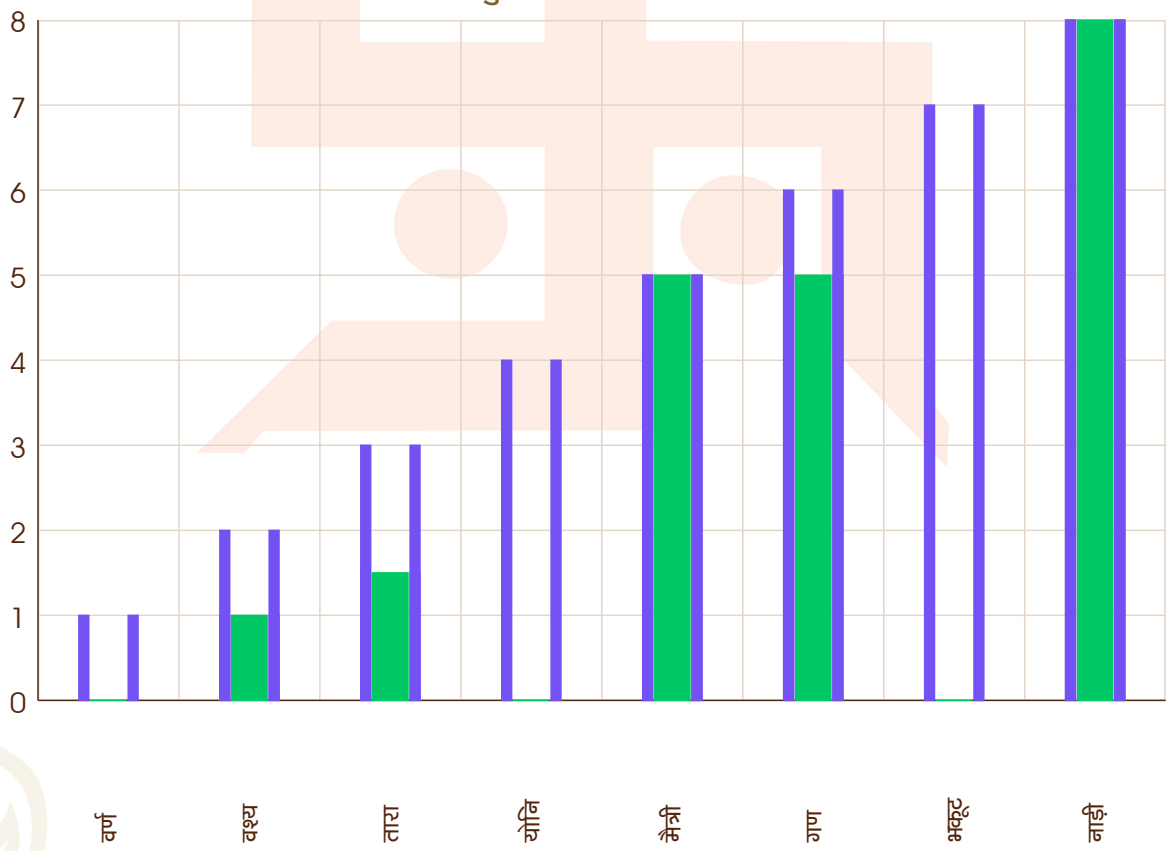

अष्टकूट मिलान

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

ड का वर्ग श्वान है तथा Himanshi का वर्ग मेष है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार ड और Himanshi का मिलान शुभ है।

मंगलीक दोष मिलान

ड मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं राहु ड कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

Himanshi मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

ड तथा Himanshi में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

ड का वर्ण क्षत्रिय तथा Himanshi का वर्ण ब्राह्मण है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। जिसके कारण दोनों के बीच सदैव अहं का टकराव होता रहेगा। साथ ही Himanshi हमेशा श्रेष्ठता मनोग्रंथि से ग्रस्त रहेंगी तथा स्वयं को अपने पति से हमेशा अधिक बुद्धिमान एवं चतुर समझेंगी। श्रेष्ठता की यही भावना ड एवं बच्चों के विकास में बाधक साबित हो सकती है।

वश्य

ड का वश्य वनचर है एवं Himanshi का वश्य जलचर है। जिसके कारण यह मिलान औसत मिलान है। दोनों एक-दूसरे के प्रति उदासीन रहेंगे तथा अपनी इच्छानुसार दोनों अपना जीवन निर्वाह करते रहेंगे। वनचर ड एवं जलचर Himanshi के बीच वैवाहिक संबंध करने से उनका वैवाहिक जीवन औसत ही माना जायेगा अर्थात न ही अच्छा और न ही बुरा। यद्यपि कि दोनों एक-दूसरे का ख्याल नहीं रखेंगे फिर भी अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन भली-भांति करते रहेंगे। इनका जीवन सामान्यतः नीरस ही रहेगा क्योंकि प्रेम एवं रोमांस के तत्व इनके जीवन से अनुपस्थित ही रहने वाले हैं।

तारा

ड की तारा प्रत्यरि तथा Himanshi की तारा साधक है। ड की तारा प्रत्यरि होने के कारण यह मिलान औसत मिलान ही है। विवाह के उपरांत ड कालांतर में बुरी आदतों, अधोपतन, चरित्रहीनता एवं नैतिक पतन का शिकार हो सकता है। उसके अवैध संबंध भी हो सकते हैं। परिणामस्वरूप Himanshi को काफी कष्टों का सामना करना पड़ सकता है। भविष्य में तनाव, निराशा, अवसाद एवं पीड़ा के कारण उसका झुकाव अध्यात्म की ओर हो सकता है।

योनि

ड की योनि मूषक है तथा Himanshi की योनि मार्जार है । अर्थात दोनों की योनि समान नहीं है। इन दोनों योनि के बीच परस्पर शत्रुता का संबंध है। अतः यह मिलान बहुत बुरा मिलान ही रहेगा। जिसके कारण दोनों के बीच अक्सर घरेलू हिंसा होती रहेगी। समय-समय पर एक दूसरे पर आघात भी कर सकते हैं। दोनों के बीच प्रेम एवं सौहार्द का अभाव बना रहेगा। दोनों के बीच परस्पर संदेह की भावना बनी रहगी। वैवाहिक जीवन में स्थिति मुकदमेबाजी तक भी जी सकती है। दोनों के बीच अलगाव की चाह भी हो सकती है। एक घर में रहकर स्थिति तलाक जैसी बनी रह सकती है। परस्पर अविश्वास की भावना के कारण वैवाहिक जीवन संघर्षपूर्ण व कलेशपूर्वक बीतने की संभावना है। अतः अपने वैवाहिक जीवन को बचाये रखने के लिए दोनों को परस्पर विश्वास व सहयोग की आवश्यकता है अन्यथा घरेलू हिंसा होने के कारण चोट भी लग सकती है। वैचारिक मतभेदों को बुद्धि बल तथा समझदारी से निपटाना चाहिये अन्यथा लड़ाई झगड़े से किसी भी समस्या का हल निकाल पाना असंभव है।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में ड एवं Himanshi दोनों के राशि स्वामी परस्पर मित्र हैं। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अति उत्तम मिलान है। ज्यातिष की दृष्टि से यदि ड एवं Himanshi के राशिस्वामी परस्पर मित्र होने के कारण इसे अति उत्तम मिलान माना जाता है। जिसके कारण ड एवं Himanshi जीवन की हर खुशी एवं सुख प्राप्त करने में सफल होंगे तथा इनमें परस्पर विश्वास, प्रेम, समझ एवं सहयोग की भावना बनी रहेगी। साथ ही हर प्रकार की सुख-सुविधाओं एवं वैभव से परिपूर्ण होंगे।

गण

ड का गण मनुष्य तथा Himanshi का गण देव है। अतः यह मिलान उत्तम मिलान है। ऐसे मिलान में Himanshi सतोगुणी होंगी तथा उसका स्वभाव दयालु, मृदु, सौम्य तथा कोमल होगा है जो कि एक महिला का नैसर्गिक गुण है तथा अन्य सभी लोग भी इन्हीं गुणों की अपेक्षा करेंगे। जबकि दूसरी ओर ड व्यावहारिक, मिलनसार, परिश्रमी, बुद्धिमान तथा महत्वाकांक्षी होंगे। जोकि इस भौतिकवादी, विश्व के पुरुष का नैसर्गिक गुण होता है। इन गुणों एवं योग्यताओं के कारण ड अपनी पत्नी, बच्चों, परिवार एवं समाज की हर अपेक्षा को पूरा करने में सक्षम रहेंगे तथा सभी इनसे खुश भी रहेंगे।

भकूट

ड से Himanshi की राशि द्वादश भाव में स्थित है Himanshi से ड की राशि द्वितीय भाव में स्थित है जिसके कारण यह मिलान अच्छा नहीं है। जिसके फलस्वरूप दोनों के बीच कलह, लड़ाई-झगड़े, मुकदमेबाजी, तलाक एवं परिवार में कुछ अनहोनी घटनाएं आदि हो सकती हैं। इस मिलान में ड परिश्रमी, परिवार से प्रेम करने वाला, अच्छा कमाने वाला तथा बचत करने वाला होगा किंतु Himanshi का स्वभाव इसके ठीक विपरीत होगा। Himanshi की शारीरिक स्थिति कमजोर तथा स्वास्थ्य अक्सर खराब रह सकता है। साथ ही Himanshi तुरंत क्रोधित होने वाली तथा अपव्ययी होंगी। वह अपने पति द्वारा कमाए गए पैसों को अपने फालतू शौकों एवं दिखावे में व्यय करने वाली होंगी। परिणामतः दोनों के बीच अक्सर लड़ाई-झगड़े होते रहेंगे।

नाड़ी

ड की नाड़ी मध्य है तथा Himanshi की नाड़ी आद्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान नहीं है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोष मुक्त है। अर्थात यह मिलान अति उत्तम मिलान है। आद्य एवं मध्य नाड़ी का समन्वय अति उत्तम होता है क्योंकि यह जीवनी शक्ति को संतुलित करता है। तीनों जीवनी शक्तियों वात, पित्त एवं कफ का संतुलन जीवन के अस्तित्व के लिए आवश्यक है। अतः आपकी संतान उत्तम स्वास्थ्य, जनन क्षमता एवं स्वस्थ तथा बुद्धिमान संतान होंगी।

मेलापक फलित

स्वभाव

ड की जन्म राशि अग्नितत्व युक्त सिंह तथा Himanshi की जलतत्व युक्त कर्क राशि है। नैसर्गिक रूप से अग्नि एवं जलतत्व में शत्रुता एवं असमानता का भाव रहता है । अतः ड और Himanshi के मध्य स्वाभाविक असमानताएं विद्यमान होंगी जिससे वैवाहिक जीवन में अनावश्यक समस्याएं एवं विवाद उत्पन्न होंगे फलतः यह मिलान अच्छा नहीं रहेगा।

ड की जन्म राशि का स्वामी सूर्य तथा Himanshi की राशि का स्वामी चन्द्रमा परस्पर मित्र है। अतः ड और Himanshi के मध्य स्वाभाविक मित्रता का भाव रहेगा तथा एक दूसरे के गुणों की वे उन्मुक्त भाव से प्रशंसा करेंगे तथा गलतियों की उपेक्षा करेंगे। इससे उनके दाम्पत्य जीवन में परस्पर सदभाव आकर्षण एवं समर्पण का भाव रहेगा तथा एक दूसरे के अस्तित्व को भी सम्मान प्रदान करेंगे। इसके प्रभाव से उनके स्वभावगत मतभेदों में भी न्यूनता आएगी तथा वैवाहिक जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

ड और Himanshi की राशियां परस्पर द्वादश एवं द्वितीय भाव में पड़ती हैं। अतः इसके प्रभाव से यदा कदा परस्पर वैमनस्य तथा विरोध का भाव उत्पन्न होगा। ड और Himanshi परस्पर उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे। ऐसी स्थिति में आर्थिक विषमता रहेगी । अतः यदि ड और Himanshi किंचित धैर्य एवं बुद्धिमता का परिचय दें तो उपरोक्त अशुभ प्रभावों में न्यूनता हो सकती है।

ड का वश्य वनचर तथा Himanshi का वश्य जलचर है। वनचर एवं जलचर में नैसर्गिक समानता होने के कारण इनकी अभिरूचियों में समानता होगी तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक अंतर भी समान रहेगा। साथ ही काम संबधों में भी एक दूसरे को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में समर्थ रहेंगे।

ड का वर्ण क्षत्रिय तथा Himanshi का वर्ण ब्राह्मण है। इसके प्रभाव से ड की प्रवृति पराक्रमी एवं साहसिक कार्यो के प्रति तत्पर होगी तथा Himanshi शैक्षणिक धार्मिक एवं शास्त्रीय कार्यो में अधिक रूचिशील रहेंगी, अतः कार्य क्षेत्र की दृष्टि से ये उन्नति मार्ग पर अग्रसर रहेंगे ।

धन

ड और Himanshi दोनों की तारा परस्पर सम है। अतः आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा तथा सामान्य रूप से धन एवं लाभ अर्जित करने में दोनों समर्थ होंगे। ड और Himanshi दोनों की राशियां परस्पर द्वितीय एवं द्वादश भाव में पड़ती है। अतः यह भकूट दोष माना जाएगा जिससे धनार्जन में परिश्रम की बहुलता रहेगी लेकिन मंगल के शुभ प्रभाव से उचित धन प्राप्त करके आर्थिक स्थिति में सुदृढ़ता बनी रहेगी।

भकूट दोष के प्रभाव से ड की प्रवृति व्ययशील होगी। वह जुआ सटटा लाटरी आदि

पर भी वे अधिक व्यय करेंगे जिससे यदा कदा आर्थिक विषमता की अनुभूति हो सकती है लेकिन इसका प्रभाव अधिक समय तक नहीं रहेगा। सामान्यतया स्थिति अनुकूल ही रहेगी तथापि ड को ऐसी प्रवृतियों की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

स्वास्थ्य

ड की नाड़ी मध्य तथा Himanshi की नाड़ी आद्य है। अतः दोनों की अलग अलग नाड़ी होने के कारण इनके ऊपर नाड़ी दोष का कोई दुष्प्रभाव नहीं रहेगा लेकिन मंगल का दोनों के स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव रहेगा। इससे दोनों गुप्त या धातु संबंधी रोगों से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा मूत्र रोग संबंधी परेशानी भी रहेगी। साथ ही ड भी हृदय संबधी रोग से कष्ट प्राप्त करेंगे तथा काम क्रियाओं में भी शिथिलता की अनुभूति करेंगे फलतः दाम्पत्य जीवन में सुख की अल्पता आएगी। Himanshi भी यदा कदा काम संबंधों में उदासीनता का परिचय देंगी। अतः उपरोक्त प्रभावों में न्यूनता करने के लिए ड और Himanshi को नियमित रूप से हनुमानजी की उपासना तथा मंगलवार के व्रत रखने चाहिए।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से ड और Himanshi का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त ड और Himanshi के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में Himanshi के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन Himanshi को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में Himanshi को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से ड और Himanshi सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरूद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार ड और Himanshi का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

Himanshi के अपने सास से सामान्यतया अच्छे संबध रहेंगे तथा सास भी उसके विनम्र स्वभाव, मधुरवाणी तथा गृहणी के रूप में उससे पूर्ण प्रभावित तथा प्रसन्न रहेंगी। Himanshi भी अपनी सास को माता के समान व्यवहार एवं सम्मान प्रदान करेंगी तथा किसी भी

गम्भीर समस्या का परस्पर सामंजस्य से समाधान करने में समर्थ रहेंगी।

साथ ही उसके ससुर भी उनकी सेवा तथा आदर के भाव से प्रसन्न रहेंगे तथा Himanshi भी अपनी ओर से उनकी सेवा सुश्रूषा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। लेकिन देवर एवं ननदों से उन्हें यथोचित सम्मान तथा सहयोग नहीं मिलेगा तथा इनकी प्रतिद्वन्दिता का भाव परस्पर दूरी बनाए रखेगा।

इसके अतिरिक्त सास ससुर का Himanshi को ससुराल में पूर्ण स्नेह तथा सहयोग प्राप्त होगा तथा वे सच्चे मन से उसे अपने परिवार में स्वीकार करेंगे।

ससुराल-श्री

ड तथा उनकी सास के आपसी संबधों में विशेष मधुरता नहीं रहेगी तथा कई मामलों में उनके मध्य काफी प्रबल मतभेद समय समय पर दृष्टि गोचर होंगे। अतः यदि परस्पर सामंजस्य एवं बुद्धिमता के भाव का प्रदर्शन किया जाय तो इन मतभेदों में न्यूनता आएगी तथा आपसी संबधों में मधुरता के भाव की वृद्धि होगी जिससे स्नेह एवं सम्मान का भाव बना रहेगा।

लेकिन ससुर के साथ में ड के संबध अच्छे रहेंगे तथा वह उन्हें अपने पिता की तरह मान सम्मान तथा सेवा का भाव प्रदान करेंगे। साथ ही समयानुसार वह ड को अपनी ओर से बहुमूल्य तथा आवश्यक सलाह भी प्रदान करते रहेंगे एवं उन्हें अपने पुत्र के समान अपनत्व तथा स्नेह प्रदान करेंगे। साले एवं सालियों के साथ ही ड के संबध अच्छे रहेंगे तथा उनसे वांछित आदर सहयोग एवं सहानुभूति प्राप्त होती रहेगी। साथ ही उनसे सामंजस्य का भाव भी रहेगा। इस प्रकार ससुराल का दृष्टिकोण ड के प्रति अनुकूल ही रहेगा।